Review Of Research
ISSN 2249-894X

Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume - 4 | Issue - 12 | Sept - 2015

इतिहास बोधके परिदृष्यमें बलवन्त सिंह का 'काले कोस': मानवीय इतिहास की त्रासद जीवन गाथा

किरण ग्रोवर
एसो॰प्रो॰,स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, डी॰ए॰वी॰ कॉलेज, अबोहर।

सारांशः—

इतिहास मनुष्य द्वारा सनिर्दिष्ट गतिविधि है तथा साहित्य प्रगतिशील, अनुभूतिशील जीवन का लिपिबद्ध अभिव्यक्तीकरण ही है। साहित्य का मूल आधार इतिहास ही है तथा इतिहाससम्बन्धी घटनाएं साहित्य की प्रगति पर प्रभाव डालती है। इतिहासकार संस्कृति को अतीतगत सन्दर्भ में उठाता है व साहित्यकार संस्कृति के सन्दर्भ में भविष्य को सम्बोधित करता है। समाज, संस्कृति, राजनीति की अन्तबाह्य द्वन्द्वात्मक प्रक्रियाओं की समग्र समझ के लिए इतिहास बोध की आवश्यकता है। इतिहास बोध से अतीत की समझदारी, उसकी विकासशीलता और हरासशीलता का मूल्यांकन होता है। अतः रचना में इतिहास बोध की अनुभूति इतिहास की संवेदनात्मक, रागात्मक और आवेगात्मक प्रतिक्रिया से उत्पन्न होती है।कालजयी रचनाओं में निहित इतिहास चेतना अतीत, वर्तमान और भविष्य के नये मार्ग खोलती है।बलवन्त सिंह जी का 'काले कोस' उपन्यास तत्कालीन विषैले वातावरण में भी धार्मिक सहिष्णुता से हिंदू–सिक्ख, मुसलमानों की सांस्कृतिक गहनता व सांझे सम्बन्धों की मिसाल कायम करता है। इस उपन्यास में बलवंत सिंह की उदार मानवीय दृष्टि अपने प्रखर रूप में अभिव्यक्त हुई है। इस उपन्यास की दीर्घाकार कथावस्तु तीन खंडों यथा मेला, झमेला और होला व बीस अध्यायों में विभाजित है। काले कोसउपन्यास में अंग्रेज़ों द्वारा बोयी गई साम्प्रदायिकता, पूंजीवादी व्यवस्था,मध्यवर्गीय नारी की मानसिकता,विभाजन से उत्पन्न साम्प्रदायिक तनाव, विभाजन की क्रूरता पर गहरी टिप्पणी की गई है। वस्तुतः 'काले कोस' साम्प्रदायिक आधार पर बंटे मानवीय इतिहास की त्रासद गाथा का जीता जागता रूप है जिसमें घटनाओं की मूल्य संवेदना को प्रकट करके अतीत, वर्तमान व भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया है। यह उपन्यास उर्दू भाषा में भी छपा है, इसे भारत और पाकिस्तान की जनता पढ़े ताकि भारत की सीमा में व सरहद पार के अन्तर्गत विभाजन के व्यर्थता बोध की गहराई को परखा जा सके, इसी में पत्र की सार्थकता है।

बीज शब्दः—इतिहास चेतना,विभाजन का व्यर्थता बोध, साम्प्रदायिक तनाव,धार्मिक सहिष्णुता,सांस्कृतिक गहनता।

मूल प्रतिपादनः—

इतिहास किसी देश के ज्ञान का वह संगम स्थल है जिसमें वहां की जनता,राजवंश परम्पराओं का राजनैतिक विकास, सामाजिक ओर आर्थिक संस्थाएं, उसके धर्म, दर्शन, संस्कृति एवम् रूचि आदि का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है।इतिहास मनुष्य द्वारा निर्मित,सनिर्दिष्ट एवम् दिशायुक्त गतिविधि है।प्रसिद्ध कथाकार यशपाल की दृष्टि में इतिहास 'ऐसा हुआ था' यह नहीं है, उसका अर्थ है 'ऐसा होता आया है और आगे भी होता रहेगा'इस व्यापकता को स्वीकारते हुए उन्होंने स्पष्ट किया है कि इतिहास सिर्फ अतीत गाथा नहीं है उसका वर्तमान में आकलन है,कुछ स्वीकार है कुछ परिहार।1साहित्य जो है वह मनुष्य के साथ वर्तमान का, दूर के साथ निकट का मिलन व्यक्त करता है।साहित्य व्यापक अर्थ ग्रहण करने वाला महान् गौरवपूर्ण शब्द हैं।प्रगतिशील, अनुभूतिशील जीवन का लिपिबद्ध व्यक्तीकरण ही साहित्य है।उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द के मतानुसार 'साहित्य जीवन की आलोचना है चाहे निबन्ध के रूप में हो चाहे कहानी या काव्य के,उसे हमारे जीवन की व्याख्या और आलोचना करनी ही चाहिए।'[2] इतिहास और साहित्य दोनों मनुष्य के द्वारा लिखे जाते हैं।इतिहास और साहित्य दोनों में किसी देश या जाति ये सम्बन्धित राजनैतिक,सांस्कृतिक,और आर्थिक स्थिति के संकेत विद्यमान होते हैं। इतिहास और साहित्य का चिर सम्बन्ध है। इतिहाससम्बन्धी घटनाएं साहित्य की प्रगति पर अपना प्रभाव डाले बिना नहीं रह सकती।साहित्य में सत्य का तत्व सौन्दर्य से संयुक्त होकर मंगलकला बन जाता है, इतिहासकासत्य कठोर सत्य के रूप में ही रहता है।अपनी मौलिक विशिष्टता के कारण इतिहास और साहित्य दो स्वतंत्र विधाएं हैं।यह निर्विवाद है कि इतिहास और साहित्य का अविच्छिन्न सम्बन्ध होता है।3साहित्य का मूल आधार इतिहास ही है। दोनों में किया प्रतिक्रिया का भाव झलकता रहता है। इतिहास और साहित्य विचार और मस्तिष्क, भाव और हृदय, गति और पथ की भांति साधन और साध्य हैं। इतिहास अतीत सम्पृक्त सांस्कृतिक मूल्य बोध को उद्घाटित करने वाला मानवीय कर्म है और साहित्य सतत सांस्कृतिक प्रक्रिया है। इतिहासकार संस्कृति को अतीतगत सन्दर्भ में उठाता है और वर्तमान में सम्बोधित करता है।

साहित्यकार संस्कृति के सन्दर्भ में अतीत से उत्प्रेरित करवर्तमान में भविष्य को सम्बोधित करता है। इतिहास बोध सत्य की पहचान और विश्लेषण दोनों करता है।[4]इसके अन्तर्गत वास्तव में क्या घटित हुआ,किस प्रकार घटित हुआ तथा क्यों घटित हुआ ये तीनों तत्व शामिल हैं।इतिहास बोध ही इतिहास चेतना है जो हमें इतिहास के प्रति सही राह दिखाती है।

इतिहास के तमाम अन्तर्विरोध,विरोधाभास,असंगतियांइसी चिन्तन प्रक्रिया द्वारा उद्घाटित होते रहते हैं। इतिहास बोध से अतीत की समझदारी, उसकी विकासशीलता और ह्रासशीलता का मूल्यांकन होता है।यह वर्तमान में तमाम अन्तर्विरोधों ,विरोधाभासों ,विसंगतियों की छानबीन करके भविष्य के सम्भावित परिणामों के लिए संकेत छोड़ देता है। समाज, संस्कृति, राजनीति की अन्तबाह्य द्वन्द्वात्मक प्रक्रियाओं की समग्र समझ के लिए इतिहास बोध की आवश्यकता है। इतिहास बोध के तीन सोपान हैं जो परस्पर अनुस्यूत हैं। अतीत की समझ के बिना हम वर्तमान की पहचान और उनके द्वन्द्वात्मक सम्बन्धों से वंचित रह जायेंगे। अतीत के सन्दर्भ विकासशील और ह्रासशील हैं ,उन्हें पैनी दृष्टि से हमें परखना चाहिए। इतिहास के अन्तर्विरोधों से जूझकर सामाजिक प्रतिबद्धता द्वारा भविष्य की संभावित चेतना को निरूपित करना है। इतिहास बोध एक तरह से पहचान का आधार है,परम्परा को अपने समय में जीवित तथा सक्रिय करने वाला इतिहास बोध है।डॉ नामवर सिंह जी ने लिखा है कि इतिहास बोध ने हमारी चेतना, अन्तर्दृष्टि और संस्कारों का परिष्कार कर उसे बदल दिया है, वही साहित्य के क्षेत्र में नवीव संभावनाओं को निरूपित किया है।[5] डॉ राजेश्वर सक्सेना के अनुसार 'इतिहास बोध से युग सापेक्ष संस्कृति की वस्तुपरकता को पहचाना जा सकता है चूंकि इतिहास ही काल सापेक्ष इतिहास की आंख है,जीवन चेतना का प्रत्यक्षदर्शी है,भविष्य की संभावनाओं की व्याख्याता और विश्लेषक है।'[6]

इतिहास बोध का अर्थ ऐतिहासिक घटना को निरूपित करना नहीं है बल्कि घटना की मूल्य संवेदना को प्रकट करना है।अतः रचना में इतिहास बोध की अनुभूति इतिहास की संवेदनात्मक, रागात्मक और आवेगात्मक प्रतिक्रिया से उत्पन्न होती है।कालजयी कृतियों में निहित इतिहास चेतना अतीत, वर्तमान और भविष्य के नये मार्ग खोलती है।कालजयी कृतियां ही प्रामाणिक इतिहास बोध की पहचान का आधार होती हैं।इतिहास प्रक्रिया के विविध सोपानों एवम् पड़ावों की कंटकाकीर्ण पगडंडियों से गुजर कर ही कलाकृतियों में इतिहास बोध निर्मित होता है।इतिहास प्रक्रिया से गुजरी रचना तथ्यों का विकास विस्तार ग्रहण करती है।यह रचना का स्थिरीकृत बिन्दु नहीं है बल्कि बोध कोउद्वेलित करने का माध्यम है।युग की धड़कन के प्रति जागरूक रहकर काल प्रवाह के सत्यों की मूल्यगत पहचान रखना ही इतिहास बोधकी आन्तरिकता को समझना है।सामयिक घटनाओं की मूल्य सता के प्रति प्रतिबद्धता का निर्वाह करने से लेखक की कृतियों मेंइतिहास बोध की अन्तर्ध्वनियां स्वतः ही उठने लगती हैं। साहित्यकार के वर्गीय संस्कार, जातीय चरित्र एवम् इतिहास प्रतिबद्धता ही उसके इतिहास बोध को नया आधार देती है।7रचनाकार को अपनी प्रतिभा का प्रतिफलन काल प्रवाह से ही प्राप्त होता है।साहित्यकार को इतिहास बोध की प्रामाणिक समझ ही रचना को सार्वकालिकता प्रदान करती है।

बलवन्त सिंह 'काले कोस'उपन्यास में सचेत दृष्टि से कथा भूमि के विश्वसनीय यथार्थ तक पहुंचने का प्रयास करते हैं।पंजाब की मिट्टी में रचे बसे बलवन्त सिंह के पात्र अपनी कमज़ोरियों से जूझते हुए भी पाठक की स्मृति में अमिट छाप छोड़ते हैं। यह रचना आज के भारत पाक में मित्रता बढ़ाने के उद्देश्य से अधिक प्रासंगिक है।उस समय के विषैले वातावरण में भी बलवन्त सिंह जी ने धार्मिक सहिष्णुता से हिंदू–सिक्ख, मुसलमानों के सांस्कृतिक रूप से गहन व सांझे संबंधों की मिसाल कायम की है। काले कोस' में बलवंत सिंह की उदार मानवीय दृष्टि अपने प्रखर रूप में अभिव्यक्त हुई है।[8]विरसे का सिराज को सरहद पार करवाना और हद पर एक दूसरे से गले मिलना यही संदेश प्रेषित करता है कि हमें प्राचीन समय में ने ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने तथा आधुनिक समय में राजनेताओं ने ज़बरदस्ती अलग किया है तथा हमें चिन्तन के लिए मजबूर किया है कि हम लोगों में बंटने को क्या है, इस सन्दर्भ में 'काले कोस' गहरे स्तर पर मानवीय रचना है। इस उपन्यास की दीर्घाकार कथावस्तु तीन खंडों व बीस अध्यायों में विभाजित है। इसके तीन खंडों के शीर्षक है – मेला, झमेला और होला।

मेला खंड में गांवों में डकैतियों व ब्रिटिश पुलिस के भ्रष्टाचार के किस्से व्याख्यायित हुए हैं, चार गांव का सरदार पिशौरा सिंह ज़मीन का मालिक है। उनका एक बेटा शहर में पढ़ता है और बेटी गोविंदी है। गांव का जवान विरसा दंगा, फसाद, डकैती आदि में मस्त रहता है। सुच्चा सिंह, गीटा, बग्गा साहसी, शिंगारा सिंह, शुर्ली, अल्ला दित्ता आदि उसके साथी हैं। पटियाला इलाके में उसका दोस्त सिराज रहता है। विरसे का बाप बीमार पड़ा है और उसके जमीन पर काम करने वाले दो भाई उसकी देखभाल करते हैं। पिशौरा सिंह का बेटा सूरत सिंह विचारों से वामपंथी है और डा. महेन्द्र कौर उसकी दोस्त है। वे लोग गांव में जागृति लाने के लिए काम करना चाहते है।सूरत सिंह गांव में आकर समाजवादी क्रांतिकारी बातें करता है। चार गांवों की सांझी जमीन पर वह सांझी खेती की वकालत करता है। उसकी पूंजीवाद और जागीरदारी के खिलाफ की जाने वाली बातें गांव वालों की समझ से परे हैं। महेन्द्र कौर से उसे पहली नजर में ही मुहब्बत हो गई थी। चारगांव में समाज सुधार के लिए व लोगों से जुड़ने के लिए महेन्द्र कौर डिस्पेंसरी खोलती है। बिना विवाह किए 65 साल रहने वाले सूरत सिंह और महेन्द्र कौर के सम्बन्धों का शुरू–शुरू में तो लोग उपहास करते हैं लेकिन धीरे–धीरे धैर्य व विश्वास, सेवा से दोनों लोगों का मन पर कब्जा कर लेते हैं।

'झमेला' खंड में डकैती का माल लेकर विरसा सिराज के यहां जाता है। चारगांव का करीमू तीन औरतें लेकर गांव आता है। इन तीन औरतों में से भरतपुर की बेला करीमू को छोड़ विरसे के पास आ जाती है। विरसा उसे गांव ले आता है, लेकिन बेला उसके प्रति वफादार न होकर, किसी से भी संबंध बना लेती है।इस बीच गांव के हेडमास्टर सूरज सिंह, मास्टर चानन मल्ल आदि के साथ सूरत सिंह जिन्नाह के दो राष्ट्र सिद्धान्त पर भी चर्चा करते हैं। 1945–46 के दिनों का वर्णन है, जब सांप्रदायिक तनाव बढ़ने लगता है, मुस्लिम लोग भी गांव में आने लगते हैं और पाकिस्तान की चर्चा चलने लगती है। चारगांव के मुसलमान शांति चाहते हैं और गांव के हिन्दू सिक्खों से सुरक्षा का वायदा भी करते हैं। लोहड़ी के जश्न इक्ट्ठे मनाए जाते हैं।इस बीच करीमू गांव लौटकर सांप्रदायिक तनाव बढ़ाने लगता है। इस बीच पुलिस विरसा के साथी–राजहंस, शुर्ली और तीन लोगों को मार डालती है।

'होला' खंड में विभाजन की नीतियों पर चर्चा होती है। करीमू के माहौल बिगाड़ने पर उसे गांव के लोग मार डालना चाहते हैं, लेकिन वह बच जाता है। इस बीच बेला विरसे को छोड़कर भाग जाती है लेकिन गोविंदी से प्रेम करने लगता है। उसके व्यक्तित्व में पावितर्न होने लगता है। महेन्द्र कौर माता–पिता के पास लुधियाना जाती है। गांव वालों को मिलिट्री की सहायता से कैंप में पहुंचाया जाता है। इस

बीच विभाजन के माहौल में अफवाहें फैलती हैं, लूटपाट और हत्याओं का दौर चलता है। लोग काफिलों में सरहदें पार कर रहे हैं। विभाजन की स्थिति अत्यन्त दर्दनाक थी, यह सुनकर सूरत सिंह को आश्चर्य होने लगा। दंगों के कारण चारगांव के लोग इधर उधर भाग रहे थे। पाकिस्तान की मांग के बारे में सूचनाएं मिलती थी।पेशोरा सिंह का परिवारअमृतसर आ गया था, वहीं गोविन्दी घायल हुई। विरसा और काबुला आदि मुसलमान ट्रक ड्राइवरों के साथ अमृतसर पहुंच जाते हैं, इधर गाड़ी पर आ रही गोविंदी को करीमू उठा ले जाता है, पेशोरा व सूरत को चोटें लगती हैं। विरसा चारगांव लौट कर गोविंदी को छुड़ाकर लाता है। बेला इस बीच करीमू की बीबी बन गई है। मनमोहन सिंह गोविंदी व विरसे को सुरक्षित सरहद पार करवा देता है। विरसा फिर पटियाला जाकर अपने दोस्त सिराज के परिवार को बचाता है और उसे रेशमा के मनचाहे सुल्तान सहित सुरक्षित सरहद पार पहुंचाता है। उपन्यास की समाप्ति पर सरहद पर विरसा और सिराज एक दूसरे से गले मिलते हैं। यह उपन्यास उर्दू भाषा में भी छपा है, इसे भारत और पाकिस्तान की जनता पढ़े ताकि विभाजन का व्यर्थता बोध गहरा हो सके।प्रमिला जी ने लिखा है कि बलवन्त सिंह जी ने 'काले कोस'उपन्यास मेंकाले कोसों की कलंकित महिमा को रूपायित किया है। जिन्होंने देश के 'दो देश एक प्राण' मानवों के बीच काले कोस की दूरी पैदा कर उसे दो भागों में विभाजित कर दिया है।[8]

बलवन्त सिंह 'काले कोसउपन्यास में अंग्रेज़ों द्वारा बोयी गई साम्प्रदायिकता का विशद् निरूपण किया है साथ ही पूंजीवादी व्यवस्था का भी उल्लेख भी किया है। साम्प्रदायिक उन्माद के सम्बन्ध में प्रसंग इस प्रकार है –'जो कुछ हुआ है उसमें मुस्लिम जनता का दोष नहीं है।यह सरासर अंग्रेज़ों की शरारत है कि आज भोली भाली जनता का ध्यान भूख, प्यास, पूंजी के गलत बंटवारे और पूंजीपतियों के अन्यायों और अत्याचारों से हटाकर उन्हें धर्म के नाम पर भड़काया जा रहा है।एक दूसरे के खून का प्यासा बनाया जा रहा है।लेकिन अन्त में मानवता की जीत होगी,मज़दूरों और किसानों की विजय होगी और धर्म और जाति के भेद मिटाकर दुनिया के सब मेहनतकश इन्सान एक दूसरे के गले मिलेंगे। मनुष्य कभी नहीं मरेगा, मनुष्य कभी नहीं मर सकता।'[9]इन वाक्यो से प्रतिध्वनित होता है कि अंग्रेज़ों द्वारा की गई साजिश और पूंजीवादी व्यवस्था का स्वर श्रुतिगत होता है।

इस उपन्यास की कथावस्तु ग्रामीण कथा पर आधारित है और ग्रामीणों की आर्थिक व्यवस्था कृषि पर आश्रित है।'काले कोस' उपन्यास में तत्कालीन कृषि व्यवस्था का उल्लेख किया गया है।भारत में व्याप्त पूंजीवादी व्यवस्था के खिलाफ़ आवाज़ उठाने वाले सूरत सिंह का वक्तव्य इस प्रकार है–'आज की दुनिया में कोई पूंजीपति नहीं होना चाहिए क्योंकि वास्तव में जो कुछ यह पूंजीपति घर बैठे खते हैं ओर जिस धन के ये मालिक बने बैठे हैं,यह दरअसल इनका नहीं है, इस पर सब किसानों और मज़दूरों का अधिकार है।'[10]सूरत सिंह को चारगांव के किसानों की हालत देखकर अत्यधिक निराशा हुई कि किसान सब पिछड़े हुए होते हैं,आर्थिक संकटों में घिरे हुए होते हैं, इसलिए उनकी कठिनाइयों के समाधान की आवश्यकता है। इस प्रकार किसानों की स्थिति के बदलाव के लिए सामाजिक क्रान्तियों का अभ्युदय हुआ।आजकिसानों की आर्थिक व्यवस्था में सुधार तो अवश्य हुआ है लेकिन किसान आज भी आत्महत्या के घेरे में अभिशप्त है।

मध्यवर्गीय नारी की मानसिकता का चित्रण कुमारी महेन्द्र कौर के माध्यम से बलवन्त सिंह जी नेविवेच्य उपन्यास में किया गयाहै। इस उपन्यास में महेन्द्र कौर सूरत सिंह पर विश्वास करके चारगांव आती है। परस्पर विश्वास के बल पर महेन्द्र कौर चारगांव के लोगों की सेवा के लिए तत्परता प्रकट करती है। सूरत सिंह को भी विश्वास है कि महेन्द्र कौर अपना काम सही ढंग से करेगी।इस उपन्यास का प्रसंग देखिए–'महेन्द्र शाम होते ही मांगट चली जाती और फिर सुबह 8–9 बजे तक लौट आती थी।यह उसका नित्य का काम था।किन्तु ऐसा भी होता था कि जब उसका प्यार भरा मन विवश कर देता तब वह मुंह अंधेरे ही घर से चल खड़ी होती।मांगटऔर झोंपड़ियों के बीच तीन या चार फलांग से अधिक अन्तर नहीं था।'[11]पैशोरा सिंह के बेटे सूरत सिंह में महेन्द्र कौर के विचारों के कारण बदलाव रेखांकित होने लगा,तब से उसमें क्रान्ति की भावना जगने लगी। आज भी मन के हाथों विवश हो, वहां आ पहुंची थी क्योंकि दिन के समय वे एक क्षण के लिए भी इस प्रकार का साहस नहीं कर सकते थे।उनका इतना कड़ा विरोध किया जा रहा था कि उन्हें अपने आदर्श, सिद्धान्त और परस्पर विश्वास को नये सिरे से दृढ़ से दृढ़तर बनाने की आवश्यकता का अनुभव होता रहता था।महेन्द्र कौर इतनी भावुक तो नहीं थी फिर भी अपना मन कुछ विवश हो गया था तो वह अवश्य ही सूरत के घर आती है। पुरुष की विजय के पीछे महेन्द्र कौर उतम उदाहरण बन कर उभरती है।महेन्द्र कौर व सूरत सिंह झोंपड़ी में रह कर समाज सेवा के माध्यम से लोगों का दिल जीतने लगे।उन दोनों की मानसिकता पूरे गांव के लिए उपयोगी सिद्ध होने लगी।मैदान में क्यारियां देखने पर महेन्द्र कौर ने कहा–'यहां मैं फूलों का बीज बोउंगी।'[12] महेन्द्र कौर के गांव में रहने पर स्त्रियों में चर्चा होने लगी किवह तो आवारागर्द है, इस बात का जवाब देने के लिए सूरत सिंह की बहन गोविन्दी का वक्तव्य देखिये–'वह डॉक्टर है, जो स्त्रियां डाक्टरी करती हैं,उन्हें अपना काम तो करना ही पड़ता है।अगर वह घर में घुसी बैठी रहे तब फिर कैसे काम चले।'[13]गोविन्दी की सोच का गांव की स्त्रियों पर कतई प्रभाव नहीं पड़ता फिर भी वे बुरी बातें करने लगती हैं।

साम्प्रदायिकता का ज़हर हमारे समाज में फैल रहा है।साम्प्रदायिकता का प्रश्न आज प्रबुद्ध जनों को भी मथ रहा है।कुछ लोग धर्म से जोड़कर इसका हल ढूंढने में लगे है,कुछ के लिए यह राजनीतिक समस्या है।साम्प्रदायिकता धार्मिक कट्टरता का वह रूप हैं ,जहां एक धर्म के मतावलम्बी के प्रति विद्वेष का भाव रख साम्प्रदायिकता के बीज निश्चित रूप से मध्य काल में बोये थेपर उन्हें अंकुरित करने और फलने फूलने का अवसर देने का श्रेय मुख्यतः ब्रिटिश शासन और आज की राजनीतिक व्यवस्था को है।'काले कोस'उपन्यास साम्प्रदायिक आधार पर बंटे मानवीय इतिहास की त्रासद गाथा का जीता जागता रूप है। साम्प्रदायिकता का संकेत इस प्रकार है–'पाकिस्तान लेने के लिए बड़े ज़ोर से मांग की जा रही है।हमें तो पाकिस्तान का पता ही न चल सका।आखिर पाकिस्तान से मतलब यह है कि ऐसा मुल्क बनाया जाये जहां इस्लामी हुकूमत हो और वहां एक भी हिन्दू सिक्ख को रहने की इजाजत न हो।'[14]चारगांव के साम्प्रदायिक विद्वेष के वातावरण का उल्लेख इस प्रकार है'साम्प्रदायिक वातावरण इस प्रकार बिगड़ चुका था कि धीरे धीरे दारे में सिर्फ मुसलमान जाने लगे। हिन्दू और सिक्ख अपनी जगह पर बिल्कुल चौकन्ने हो रहे थे। भीतर ही भीतर हथियार और लड़ाई की सामग्री एकत्र की जा रही थी।यों हंसना बोलना जारी था किन्तु भीतर ही भीतर परस्पर घृणा और द्वेष का विष फैलता जा रहा था।'[15]

चिरगांव में तो मुसलमानहिन्दूओं और सिक्खों का साथ देते है परन्तु मियां दिल मुहम्मद के घर मुस्लिम लीग का एक सदस्य आता है जोकि एकता में दरार पैदा करता है।उसके साथ बैठकें करने वाले हिन्दू ,सिक्ख, मुसलमान अपनी अपनी बैठकें करना प्रारम्भ कर देते हैं।पैशोरा सिंह की बैठक में खेमचन्द जैसे ग्रामवासियों को हिन्दू मुस्लिम तनाव के बारे में सचेत करते हैं।गांव में हिन्दू व सिक्खों को यह

सूचना दी जाती है कि–'चारगांव का हर एक मुसलमान चुपके चुपके तैयार किया जा रहा है।एक दिन ऐसा आयेगा कि यही मासूम सूरतें बन्दूक,बल्लम और चूरे लेकर हम पर पीले पड़ेगें।'[16]इस पर पैशोर सिंह जैसे समझदार भी गुस्से से तिलमिला उठते हैं–'लेकिन हमने भी चूड़िया तो नहीं पहन रखी,अगर मुसलमानों ने ऐसा साहस किया तो हम चारगांव खाली करवा देंगे।'[17]आखिरकार देश का विभाजन हो जाता है।चारगांव के हिन्दू सिक्ख लोग रातों रात गांव छोड़ कर निकल जाते है।

बलवंत सिंह ने भारत और पाकिस्तान केविभाजन से उत्पन्न साम्प्रदायिक तनाव का चित्रण किया है परन्तु अन्त में सिराज और विरसे को गले मिला कर विभाजन की क्रूरता पर गहरी टिप्पणी की है।पंजाब के जनजीवन से संबंधित 'काले कोस' में नायक का मानवीय रूपांतरण किया है। विरसा को लगी चोट भी महेन्द्र कौर जिस तत्परता से ठीक करती है, उसमें मानवीयता झलकती है।बेला के द्वारा अनेक पुरुषों से सम्बन्ध स्थापित करने पर विरसा अपराध के रास्ते से इंसानियत के रास्ते पर लौटता है और विभाजन के दौरान उसका मानवीय रूप उभरताहै।बलवंत सिंह जी का उद्देश्य नगर और गांव के लोगों की मानसिकता में आ रहे भेदभाव का चित्रण करना है जिसके परिणामस्वरूप साम्प्रदायिक दंगों व धार्मिक खोखलेपन का भी का विवरण प्रस्तुत किया है।अनैतिक व्यवहार से जीवन जीने के बाद आम आदमी में होने वाले परिवर्तन का रेखांकन किया है।बलवंत सिंह ने'काले कोस' की कथावस्तु में अतीत के अन्तर्विरोध, विरोधाभास, असंगतियो को चिन्तन प्रक्रिया द्वारा उद्घाटित किया है जिससे सत्य की पहचान होती है कि क्या घटित हुआ,किस प्रकार घटित हुआ तथा क्यों घटित हुआ फलतः समाज, संस्कृति, राजनीति की अन्तबाह्य द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया स्पष्ट होती है।बलवंत सिंह जी नेघटनाओं की मूल्य संवेदना को प्रकट करके अतीत, वर्तमान व भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया है, इसी कारण उनकी कालजयी रचना में इतिहास बोध की अन्तर्ध्वनियां गुंजायमान होती हैं। उनकी औपन्यासिक कृति 'काले कोस' महाकाव्यात्मक गरिमा से परिपूर्ण है।यह उपन्यास उर्दू भाषा में भी छपा है, इसे भारत और पाकिस्तान की जनता पढ़े ताकिभारत की सीमामें व सरहद पार के अन्तर्गत विभाजन के व्यर्थता बोध की गहराईको परखा जा सके, इसी में पत्र की सार्थकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1.मधुमती,यशपाल की दृष्टि में इतिहास, पृ॰सं॰67।
2.प्रेमचन्द कुछ विचार, पृ॰सं॰ 69।
3.मैनेजर पाण्डेय, साहित्य और इतिहास दृष्टि,पृ॰सं॰ 197।
4.राकेश कुमार, समकालीन कविता और इतिहास बोध,पृ॰सं॰18।
5.नामवर सिंह,इतिहास और आलोचना,पृ॰सं॰ 146।
6.राजेश्वर सक्सेना, इतिहास विचारधारा और साहित्य,पृ॰सं॰20।
7.वीरेन्द्र मोहन, इतिहास और संस्कृति, पृ॰सं॰152।
8. www.researchgate.net/...and_Indian
9.बलवन्त सिंह, काले कोस ,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, 1999,पृ॰सं॰261।
10.वही, पृ॰सं॰ 57।
11.वही, पृ॰सं॰ 84।
12.वही, पृ॰सं॰ 87।
13.वही, पृ॰सं॰ 86।
14.वही, पृ॰सं॰209।
15.वही,पृ॰सं॰ 237।
16.वही,पृ॰सं॰ 216।
17.वही,पृ॰सं॰ 98।

किरण ग्रोवर
एसो॰प्रो॰,स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, डी॰ए॰वी॰ कॉलेज, अबोहर।